वर्तमान भारत के आर्थिक विकास में शिक्षा की भूमिका का एक अध्ययन

डॉ0 राकेश कुमार, सहायक प्राध्यापक, मिलिया कनिज फातमा विमेंस टीचर्स टेनिंग कालेज, रामबाग, पूर्णिया, बिहार

सारांश

शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति का व्यक्तित्व, उसकी आयु और माँग के अनुसार विभिन्न विषयों को अपनाकर वांछित तरीके से विकसित होता है। यह किसी राष्ट्र के मानव संसाधनों के विकास में महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। शिक्षा किसी व्यक्ति के लिए सबसे शक्तिशाली साधनों में से एक है क्योंकि यह उसे नई चीजें सीखने और उन चीजों का बेहतर तरीके से उपयोग करने में मदद करती है। आर्थिक विकास को हमेशा शिक्षा से बहुत प्रभावित माना जाता है। यह अर्थव्यवस्था को अपने संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और कुशल श्रम शक्ति प्रदान करता है। परिणामस्वरूप, शिक्षा में सुधार किसी राष्ट्र की निरंतर आर्थिक समृद्धि का मूल मार्ग है। शिक्षा ने लंबे समय से विद्वानों, अर्थशास्त्रियों, राजनेताओं और सरकार का ध्यान आकर्षित किया है क्योंकि यह मानव संसाधन विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, हमारे काम में विश्लेषण के लिए समय–श्रृंखला डेटा का बहुत अधिक उपयोग किया जाता है। एक समय–श्रृंखला अक्सर उन मूल्यों की प्रगति होती है जो एक निश्चित चर ने समय के साथ ग्रहण किए हैं। समय–श्रृंखला मॉडल की परिभाषा डेटा का एक संग्रह है जिसमें समय के साथ एक या अधिक चर पर अवलोकन शामिल हैं। अध्ययन का मुख्य उद्देश्य भारत की शिक्षा और आर्थिक विकास के बीच संबंधों की जांच करना और उचित मॉडल के माध्यम से शैक्षिक आंकड़ों के आधार पर आर्थिक विकास की भविष्यवाणी करना है।

मुख्य शब्द, शिक्षा, अर्थव्यवस्था, स्कूल, कॉलेज, प्रशिक्षण, विश्वविद्यालय आदि।

प्रस्तावना

शिक्षा आज की एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति का व्यक्तित्व उसकी आयु और मांग के अनुसार विभिन्न विषयों को अपनाकर वांछित तरीके से विकसित होता है। यह किसी राष्ट्र के मानव संसाधनों के विकास में महत्वपूर्ण तत्वों में से एक है। शिक्षा किसी व्यक्ति के लिए सबसे शक्तिशाली साधनों में से एक है क्योंकि यह उसे नई चीजें सीखने और उन चीजों का बेहतर तरीके से उपयोग करने में मदद करती है। आर्थिक विकास को हमेशा शिक्षा से बहुत प्रभावित माना जाता है। यह अर्थव्यवस्था को अपने संसाधनों का प्रभावी ढंग से उपयोग करने के लिए आवश्यक प्रशिक्षण और कुशल श्रम शक्ति प्रदान करता है। परिणामस्वरूप, शिक्षा में सुधार किसी राष्ट्र की निरंतर आर्थिक समृद्धि का मूल मार्ग है। शिक्षा ने लंबे समय से विद्वानों, अर्थशास्त्रियों, राजनेताओं और सरकार का ध्यान आकर्षित

किया है क्योंकि यह मानव संसाधन विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। सरकार अपने मानव संसाधनों के मानक को बढ़ाने के लिए देश के शिक्षा क्षेत्र में निवेश बढ़ा रही है। विकासशील देशों की सरकारों ने शिक्षा के लिए सार्वजनिक वित्त को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है क्योंकि यह प्रगति प्राप्त करने के लिए आवश्यक घटक है। यह सच है कि आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय में वृद्धि हुई है, लेकिन यह पहचानना भी महत्वपूर्ण है कि आर्थिक विकास ने शिक्षा पर सार्वजनिक व्यय में वृद्धि को प्रेरित किया है। यह देखा गया है कि 1980 के बाद से, जब भारत की अर्थव्यवस्था ने राज्य–निर्देशित आर्थिक मॉडल से व्यवसाय–समर्थक प्रणाली में बदलाव शुरू किया, तो प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक क्षेत्रों में शिक्षा में निवेश और देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के बीच एक स्पष्ट सकारात्मक सहसंबंध था। इन देशों में शिक्षा के लिए धन का आवंटन आर्थिक विकास का प्रत्यक्ष परिणाम है, जिसमें तत्काल और दीर्घकालिक दोनों दृष्टिकोण शामिल हैं। फिर भी, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि शिक्षा में निवेश में वैश्विक स्तर पर आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने की क्षमता है, हालांकि यह प्रभाव केवल लंबे समय तक ही देखा जा सकता है।

शोध पद्धति

मेरा यह शोध पत्र द्वितीयक डेटा पर आधारित है। द्वितीयक डेटा विभिन्न सरकारी और गैर–सरकारी विभागों की वेबसाइटों पर उपलब्ध डेटा से एकत्र किया गया है। प्रस्तुत शोध में आर्थिक विकास पर शिक्षा के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए एकत्रित आंकड़ों को एक तालिका में प्रस्तुत किया गया है तथा विभिन्न चरों के बीच संबंध जानने के लिए सहसंबंध गुणांक और निर्धारण गुणांक का अनुमान लगाया गया है। जबकि सहसंबंध के महत्व को परखने के लिए टी–टेस्टय (टी–टेस्ट), आर्थिक विकास पर शिक्षा के प्रभाव के तुलनात्मक अध्ययन के लिए मानक त्रुटि, संभावित त्रुटि आदि का उपयोग किया गया है।

भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रमुख हितधारक हैं

शैक्षिक संस्थानः वे संस्थान जो विभिन्न शिक्षा उत्पाद जैसे स्कूल, कॉलेज, विश्वविद्यालय, विभिन्न कोचिंग क्लासेस (सामूहिक रूप से समानांतर/छाया शिक्षा प्रणाली के रूप में जाना जाता है) की आपूर्ति करते हैं जैसे राज्य सीधे तौर पर शैक्षिक संस्थानों को चलाकर और अप्रत्यक्ष रूप से निजी क्षेत्र के आपूर्तिकर्ताओं को वित्तीय सहायता प्रदान करके शिक्षा की आपूर्ति पक्ष को प्रभावित करता है। शिक्षा नीति और शिक्षा के संबंध में नियम और विनियम बनाना राज्य की अन्य दो जिम्मेदारियाँ हैं। भारत में शिक्षा संविधान की समवर्ती सूची में है। इसलिए, संघ और राज्य सरकार दोनों ही शिक्षा प्रणाली को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

परिवार या व्यक्तिः परिवार शिक्षा की मांग करते हैं जो विभिन्न आर्थिक और सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों से प्रभावित हो सकती है। यह मांग आम तौर पर प्रकृति से उत्पन्न होती है। शिक्षा की मांग शायद ही कभी इसके लिए की जाती है। आमतौर पर, परिवार रोजगार बाजार में शिक्षा से बहुत अधिक रिटर्न की उम्मीद करते हैं। ये रिटर्न इसलिए संभव हैं क्योंकि रोजगार बाजार में विभिन्न कौशलों की मांग है जिन्हें शिक्षा के माध्यम से विकसित किया जा सकता है। परिवार अपनी स्थिति के मूल्य के लिए भी शिक्षा की मांग कर सकते हैं। नियोक्ता श्रम बाजार में शिक्षित व्यक्ति आपूर्ति पक्ष पर होते हैं और नियोक्ता मांग पक्ष पर। पेश की जाने वाली मजदूरी सीधे किसी विशिष्ट कौशल की मांग की तीव्रता और उसकी सापेक्ष कमी या बहुतायत से संबंधित होती है। आमतौर पर, यह अपेक्षा की जाती है कि किसी व्यक्ति को मिलने वाली शिक्षा की मात्रा का उसे मिलने वाली मजदूरी के साथ सकारात्मक संबंध होना चाहिए। आज की सभी अर्थव्यवस्थाओं में जहाँ यह जानकारी एकत्र की गई है, किसी व्यक्ति का वेतन उसकी शिक्षा के स्तर के अनुसार बढ़ता है। यह हर एक व्यक्ति के लिए मामला नहीं है, क्योंकि सहसंबंध पूर्ण नहीं है, लेकिन यह आम तौर पर सटीक है और अधिकांश लोगों के लिए सही है। आज भारतीय समाज में शिक्षा की मांग और आपूर्ति में समाज कोई प्रत्यक्ष भूमिका नहीं निभाता है। लेकिन समाज शैक्षणिक संस्थानों के साथ–साथ घरों में विभिन्न परोपकारी योगदानों के माध्यम से शिक्षा की मांग और आपूर्ति दोनों पक्षों को प्रभावित कर सकता है। दबाव समूहों के माध्यम से समाज शिक्षा नीति और शिक्षा प्रणालियों के कामकाज को प्रभावित कर सकता है। उच्च राष्ट्रीय शिक्षा औसत से होने वाले जीवन स्तर में वृद्धि से समाज पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मध्यम और उच्च वर्ग के लोगों को उच्च शिक्षा सब्सिडी का लाभ मिलने की अधिक संभावना है।

शोध पूर्व साहित्यक अवलोकन

मेने अपने इस शोध पत्र के लिए निम्न शोध पुस्तको का गहन अध्ययन किया है और इन्ही के आधार पर मेने इस शोध पत्र में निष्कर्ष निकाले है जो इस प्रकार है–

सिन्हा, महेन्द्र (2023) भारतीय अर्थव्यवस्था में विकास से पहले की इन पूर्व–आवश्यकताओं की एक महत्वपूर्ण संख्या गायब है। शोध ने भारत में उत्पादन विकास को आगे बढ़ाने में एक कारक के रूप में मानव पूंजी संसाधनों के कार्य का अध्ययन किया। जांच के लिए सैद्धांतिक आधार नियोक्लासिकल संवर्धित सोलो विकास सिद्धांत द्वारा प्रदान किया गया था, और जांच के लिए पैनल तकनीक का उपयोग किया गया था। निष्कर्षों के अनुसार, एक सरकार जो आर्थिक परिणामों को बेहतर बनाने में रुचि रखती है, उसे सार्वजनिक निवेश और मानव पूंजी के उत्पादन पर खर्च की जाने वाली धनराशि बढ़ाने पर अधिक जोर देना चाहिए। चूंकि उपभोक्ता व्यय मुख्य रूप से अर्थव्यवस्था के मांग पक्ष को प्रभावित करेगा, इसलिए संभावना है कि यह आर्थिक विकास में परिवर्तित न हो। सार्वजनिक क्षेत्र को अपना ध्यान उन उद्योगों से हटाकर उन क्षेत्रों में निवेश बढ़ाना चाहिए जो निजी क्षेत्र के साथ सीधे

प्रतिस्पर्धा में हैं या जो इसके विकास को बाधित करते हैं और इसके बजाय उन क्षेत्रों में निवेश को बढ़ावा देना चाहिए जो निजी क्षेत्र को लाभान्वित करेंगे।

नूटा, एलिना (2022) पहले साम्यवादी राष्ट्रों के शिक्षा क्षेत्र ने बाजार अर्थव्यवस्था में संक्रमण और उसके बाद यूरोपीय संघ में भागीदारी के दौरान उथल–पुथल का अनुभव किया। ये अशांत घटनाएँ एक साथ घटित हुईं। इस लेख का उद्देश्य 11 पूर्वी यूरोपीय देशों में शिक्षा के लिए आवंटित सार्वजनिक व्यय और आर्थिक विकास के बीच सहसंबंध पर एक अध्ययन करना है जो पहले साम्यवादी शासन के अधीन थे और वर्तमान में यूरोपीय संघ का हिस्सा हैं। यह अवलोकन पाँच देशों के लिए सही है,जहाँ ऐसा कोई संबंध मौजूद नहीं है, जबकि छह देशों के मामले में, वास्तव में एक दीर्घकालिक संबंध है। इसके अलावा, तत्काल समय सीमा में, सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों का एक संयोजन स्पष्ट हो जाता हैः चार राष्ट्र अनुकूल परिणामों का अनुभव करते हैं, लेकिन दो देशों को प्रतिकूल नतीजों का सामना करना पड़ता है।

शिक्षा और आर्थिक विकास

मानव जीवन में शिक्षा की भूमिका को विभिन्न दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक मानव समाज ने मानव जीवन में शिक्षा की सकारात्मक भूमिका को पहचाना है। प्राचीन काल में शिक्षा प्रणाली या तो सामाजिक–राजनीतिक या धार्मिक मानदंडों द्वारा आकार लेती थी। लोकतंत्र और औद्योगिक क्रांति के उदय के साथ शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण बदल गया। पुरानी दुनिया में विद्वानों का सम्मान किया जाता था, लेकिन उनमें से अधिकांश 'खाली जेब' वाले थे। औद्योगिक अर्थव्यवस्था में शिक्षा धीरे–धीरे मुख्य रूप से आर्थिक चर बन गई और यह विभिन्न नौकरियों के लिए भी एक शर्त बन गई। आधुनिक अर्थव्यवस्थाओं में शिक्षा की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए, एग्लो हेंडरसन ने तर्क दिया, ''अमेरिका में, उच्च शिक्षा केवल सभ्य सज्जनों के लाभ के लिए एक विलासिता नहीं है। यह हमारे जीवन के तरीके के लिए आवश्यक तैयारी है। यह मानव संसाधनों और इसलिए हमारे भविष्य में एक निवेश है। शिक्षा और विशेष रूप से उच्च शिक्षा ने इस देश में व्यक्तिगत सफलता और व्यक्तिगत उन्नति के लिए सबसे अच्छे मार्ग के रूप में मुफ्त भूमि और प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों की जगह ले ली है। शिक्षा, मानव संसाधन विकास और आर्थिक विकास एक दूसरे से निकटता से जुड़े हुए हैं। वास्तव में, कुछ अर्थशास्त्री आर्थिक विकास की प्रक्रिया में गैर–मानवीय चरों की तुलना में मानवीय चरों को अधिक महत्व देते हैं। मानव संसाधनों की तुलना कंप्यूटर में मौजूद 'सॉफ्टवेयर' से की जा सकती है, जबकि पूंजी और प्राकृतिक संसाधनों की तुलना कंप्यूटर में मौजूद 'हार्डवेयर' से की जा सकती है। संभवतः यह द्वितीय विश्व युद्ध के बाद जर्मन और जापानी अर्थव्यवस्थाओं के अपेक्षाकृत तेजी से पुनरुद्धार की व्याख्या करता है। युद्ध ने केवल 'हार्डवेयर' को नष्ट किया जिसे अपेक्षाकृत कम समय में विकसित किया जा सकता है। 'सॉफ्टवेयर' यानी मानवीय कौशल और क्षमताएँ युद्ध से नष्ट नहीं

हुईं। किसी राष्ट्र की समृद्धि अंततः इस बात से निर्धारित होती है कि वह अपने लोगों की अंतर्निहित प्रतिभाओं को कितनी अच्छी तरह से पोषित और भुनाने में सक्षम है। इसका मतलब है कि लोग अंततः किसी राष्ट्र के आर्थिक विकास के लिए जिम्मेदार होते हैं। यदि कोई देश अपने लोगों के संसाधनों का विकास करने में असमर्थ है, तो एक आधुनिक राजनीतिक व्यवस्था, राष्ट्रीय एकजुटता की भावना या एक समृद्ध अर्थव्यवस्था का निर्माण नहीं किया जा सकता है। इसलिए, शिक्षा आर्थिक विकास की उत्पत्ति और परिणति दोनों है। आज की उच्च शिक्षा का एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य ''एक बौद्धिक अग्रदूत का निर्माण और पोषण करना है, जिसे समाज की ओर से सोचने और भविष्य का सामना करने के लिए वर्तमान को तैयार करने का कार्य सौंपा गया है। शिक्षा एक अमिश्रित वरदान नहीं है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में शिक्षा की भूमिका को संक्षेप में इस प्रकार बताया जा सकता है–शिक्षा आर्थिक विकास की दर, संरचना और चरित्र को प्रभावित कर सकती है। किसी देश की शिक्षा प्रणाली का स्वरूप आर्थिक असमानता का कारण और प्रभाव दोनों हो सकता है।

आज के समय में शिक्षा की मांग, पूर्ववर्ती व्याख्या यह स्पष्ट रूप से स्पष्ट करती है कि शिक्षा किसी व्यक्ति की उत्पादक क्षमता के विस्तार और राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के विस्तार दोनों के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार है। शिक्षा के अर्थशास्त्र पर चर्चा करते समय, ''शिक्षा की मांग'' शब्द का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी संबंधित सरकारों द्वारा दिए जाने वाले शैक्षिक अवसरों का किस हद तक उपयोग करते हैं। अधिकांश संदर्भों में, शिक्षा प्राप्त करना ''उपभोग वस्तु'' और ''निवेश वस्तु'' दोनों माना जाता है। इसके विपरीत, मानव पूंजी दृष्टिकोण शिक्षा को उपभोग के रूप में नहीं, बल्कि निवेश के रूप में देखता है। यह दृष्टिकोण स्वीकार करता है कि किसी व्यक्ति की शिक्षा पूरी करने से व्यक्ति को अपनी शैक्षिक उपलब्धि से भविष्य में लाभ प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। फिर भी, माता–पिता और अभिभावक अपने बच्चों और वार्डों को ज्ञान और क्षमताओं से लैस करने के इरादे से शैक्षिक संस्थानों में दाखिला लेने का निर्णय लेते हैं जो संभावित रूप से उनके भविष्य की आर्थिक संभावनाओं में योगदान दे सकते हैं। जब इस दृष्टिकोण से देखा जाता है, तो छात्र की शिक्षा पर खर्च को निवेश का एक रूप माना जा सकता है। इस संबंध में प्राथमिक शिक्षा के संभावित प्रभाव को पार करते हुए, तृतीयक शिक्षा में निवेश करना आर्थिक विकास को बढ़ावा देने के लिए एक अत्यधिक प्रभावकारी रणनीति है। परिणामस्वरूप, संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों द्वारा सार्वभौमिक प्राथमिक शिक्षा को प्राथमिकता देना आवश्यक माना गया, यद्यपि अपर्याप्त था। सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के तहत शामिल शिक्षा उद्देश्यों में यह सुनिश्चित करने का लक्ष्य शामिल है कि वर्ष 2030 तक, प्रत्येक लड़की और लड़का प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा सफलतापूर्वक पूरी कर सके जो मुफ्त और समान दोनों हो, साथ ही उच्च गुणवत्ता का मानक भी बनाए रखे। इस शिक्षा के परिणामस्वरूप प्रासंगिक ज्ञान और कौशल का अधिग्रहण होना चाहिए, जिससे प्रभावी शिक्षण परिणाम प्राप्त हों। इस उद्देश्य को सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) में से एक के रूप में वर्गीकृत किया गया है। यह माध्यमिक शिक्षा की प्राप्ति से जुड़े महत्व की बढ़ी हुई समझ

का उदाहरण है। ऐसा लगता नहीं है कि कम आय वाले राष्ट्र अपनी मानव पूंजी को बढ़ावा दे पाएंगे जो कि सार्वभौमिक प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा की स्थापना किए बिना अपनी आबादी के बड़े हिस्से को गरीबी से बाहर निकालने के लिए आवश्यक है। युवा व्यक्तियों की उच्चतर माध्यमिक शिक्षा उन देशों के लिए आर्थिक विकास में भी एक महत्वपूर्ण कारक है जो अपनी औद्योगिकीकरण प्रक्रिया में आगे हैं। नीचे दी गई तालिका 1 आर्थिक सर्वेक्षण 2023–24 और यूएनडब्ल्यूपीपी से प्राप्त द्वितीयक डेटा प्रस्तुत करती है। तालिका–1 के प्रथम कॉलम से स्पष्ट है कि भारत का साक्षरता अनुपात वर्ष 1951 से वर्ष 2021 तक क्रमशः बढ़ रहा है। वर्ष 1951 में जहां भारत की साक्षरता दर लगभग 18 प्रतिशत थी, वहीं वर्ष 2021 में यह बढ़कर 74 प्रतिशत से अधिक हो गई। जबकि स्थिर मूल्यों पर प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय 12,493 रुपये थी, जो वर्ष 2021 में बढ़कर 85,110 रुपये हो गई है। वर्ष 1951 में चालू मूल्यों पर राष्ट्रीय आय 265 रुपये थी, जो वर्ष 2021 में बढ़कर 1,26,855 रुपये हो गई है। चालू मूल्यों पर प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय एवं साक्षरता अनुपात निम्न चित्र 1.1 में दर्शाया गया है।

तालिका 1. शिक्षा और भारतीय आर्थिक सांख्यिकी

Year	Literacy Rate	Net National Income at Constant Prices	Net National Income current Prices	Per Capita NNI constant Prices	Per Capita NNI Current Prices
2021	74.37%	11536004	17194158	85110	126855
2011	72.99%	7373384	6756720	62170	56971
2001	68.84%	3924698	1902148	38515	18667
1991	52.21%	2292078	513966	27319	6126
1981	43.57%	1352931	135470	19925	1995
1971	34.45%	1011757	43598	18702	806
1961	28.30%	694569	16680	16004	384
1951	18.33%	448483	9531	12493	265

FIG. 1.1

LITERACY RATE AND PER CAPITA INCOME

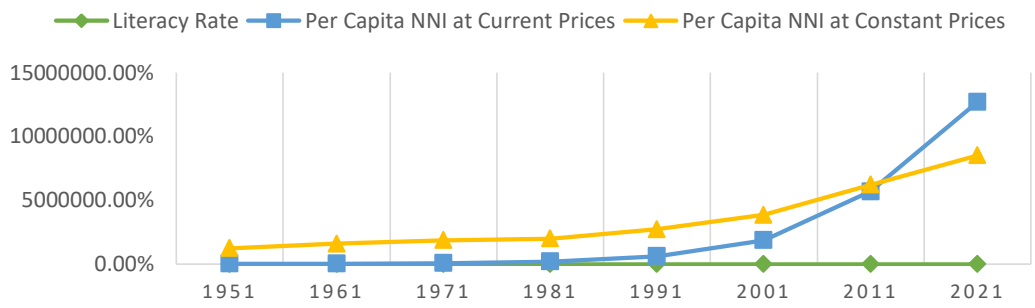

FIG. 1.2

LITERACY RATE AND NET NATIONAL INCOME

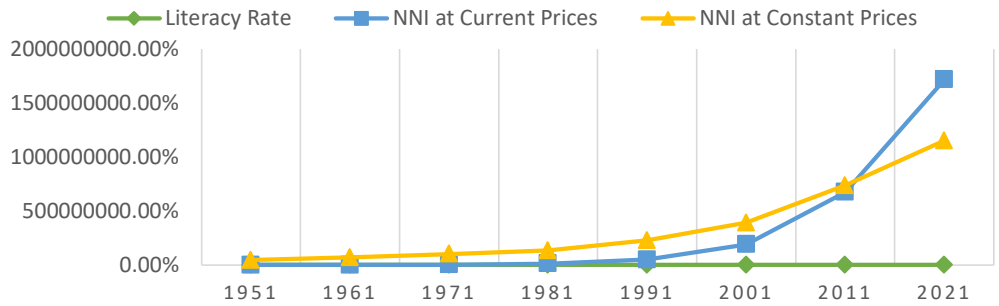

चित्र 1.1 स्थिर मूल्यों पर प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय तथा चालू मूल्यों पर प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय के मध्य सम्बन्ध को दर्शाता है। उपरोक्त चित्र से स्पष्ट है कि प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय तथा साक्षरता अनुपात एक ही दिशा में बढ़ रहे हैं, अर्थात् जैसे–जैसे साक्षरता अनुपात बढ़ रहा है, प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय भी बढ़ रही है। इसका अर्थ है कि प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय तथा साक्षरता अनुपात के मध्य सम्बन्ध धनात्मक है। वर्तमान मूल्यों पर साक्षरता अनुपात तथा प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय तथा स्थिर मूल्यों पर शुद्ध राष्ट्रीय आय के मध्य सम्बन्ध की जांच करने के लिए तालिका–1 में दर्शाए गए आँकड़ों के आधार पर दोनों चरों के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक का अनुमान लगाया गया है, जिसका परिणाम तालिका–2 में प्रदर्शित किया गया है। तालिका–2 में स्पष्ट है कि स्थिर मूल्यों पर साक्षरता स्तर तथा प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय के मध्य उच्च सहसम्बन्ध गुणांक है तथा यह भी दर्शाया गया है कि इन दोनों चरों के मध्य निर्धारण गुणांक 74 प्रतिशत से अधिक है, अर्थात् स्थिर मूल्यों पर प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय। शिक्षा विकास में एक महत्वपूर्ण कारक है। साक्षरता अनुपात और प्रति व्यक्ति शुद्ध राष्ट्रीय आय के बीच सहसंबंध के महत्व को स्थिर मूल्यों पर परखने के लिए टी–परीक्षण किया गया है, जिसे तालिका 2 के कॉलम संख्या 6 में दर्शाया गया है। 5 प्रतिशत महत्व स्तर और 95 प्रतिशत विश्वास स्तर पर

सहसंबंधों के महत्व का परीक्षण करते हुए, निम्नलिखित परिकल्पनाएँ तैयार की गईं और उनका परीक्षण किया गयाः –

शून्य परिकल्पना (H0) – स्थिर मूल्यों पर साक्षरता अनुपात और प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय के बीच कोई महत्वपूर्ण सहसंबंध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (H1) – स्थिर मूल्यों पर साक्षरता अनुपात और प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय के बीच एक महत्वपूर्ण सहसंबंध है।

Tcal = 7.84

स्वतंत्रता की डिग्री (d-f) = 6

$T0_{.05}$ = 2.45

Tcal > T0-05

इसलिए यहाँ शून्य परिकल्पना को खारिज किया जाता है। इसलिए स्थिर कीमतों पर साक्षरता अनुपात और प्रति व्यक्ति आय के बीच संबंध महत्वपूर्ण है।

शून्य परिकल्पना (H0)– वर्तमान कीमतों पर साक्षरता अनुपात और प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (H0)– वर्तमान कीमतों पर साक्षरता अनुपात और प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय के बीच एक महत्वपूर्ण संबंध है।

Tcal = 2.57

स्वतंत्रता की डिग्री (d-f) = 6

$T0_{.05}$ = 2.45

Tcal > $T0_{.05}$

इसलिए यहाँ शून्य परिकल्पना को खारिज किया जाता है। इसलिए वर्तमान कीमतों पर साक्षरता अनुपात और प्रति व्यक्ति आय के बीच संबंध।

Table-2

	Variables	**Coeff of corr & coeff of Determination**	**Standard error (S.E.)**	**Probable error (P.E.)**	**6 (P.E.)**	**T- test and Results**
1	Coefficient of correlation between Literacy rate and Per Capita NNI at constant prices	r = 0.86211	0.1129	0.07614	0.457	T_{cal} = 7.84 Degree of freedom (d.f) = 6 $T_{0.05}$ = 2.45 $T_{cal} > T_{0.05}$ Hence the null hypothesis is rejected here. Hence the correlation between literacy ratio and per capita income at constant prices is significant.
	Coefficient of determination between Literacy rate and Per Capita NNI at constant prices	r^2 = 0.7431				
2	Coefficient of correlation between Literacy rate and Per Capita NNI at current prices	r = 0.72396	0.17	0.113	0.681	T_{cal} = 2.57 Degree of freedom (d.f) = 6 $T_{0.05}$ = 2.45 $T_{cal} > T_{0.05}$ Hence the null hypothesis is rejected here. Hence the correlation between literacy ratio and per capita income at current prices.
	Coefficient of determination between Literacy rate and Per Capita NNI at current prices	r^2 = 0.5241				

निष्कर्ष

आज कल की शिक्षा व्यवस्था केवल स्कूली शिक्षा की मात्रा से संबंधित नहीं है, जिसे प्राथमिक, माध्यमिक या विश्वविद्यालय शिक्षा पूरी करने वाली आबादी के अनुपात से मापा जाता है, बल्कि सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि शिक्षा की गुणवत्ता से भी संबंधित है। अब, दुनिया भर में अभी भी 103 मिलियन युवा लोग निरक्षर हैं, और उन युवाओं में से साठ प्रतिशत से अधिक महिलाएं हैं। लेखक हनुशेक एट अल। (2010) आर्थिक विकास को बढ़ावा देने में शिक्षा की भूमिका की जांच करते हैं, जिसमें इस प्रक्रिया में शैक्षिक गुणवत्ता की भूमिका पर विशेष जोर दिया गया है। अनुभवजन्य शोध ने एक व्यक्ति के कौशल के स्तर और उनके विकास की दर के बीच एक मजबूत संबंध प्रदर्शित किया है। विकासशील देशों के आर्थिक विकास के लिए मानव पूंजी को एक महत्वपूर्ण निर्धारक के रूप में मान्यता दिए जाने के कारण, शैक्षिक उपलब्धि के महत्व पर असंगत जोर दिया गया है। शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में, विकासशील देशों ने धनी देशों के साथ असमानता को कम करने में उल्लेखनीय प्रगति हासिल की है। हालांकि, विद्वानों की जांच ने आर्थिक विकास को सुविधाजनक बनाने में संज्ञानात्मक क्षमताओं के महत्वपूर्ण महत्व को उजागर किया है। भविष्य में दो प्रकार की शिक्षा होगी, एक व्यक्ति को शिक्षित

करने के लिए शिक्षा, अध्ययन के लिए शिक्षा और देश के आर्थिक विकास के लिए शिक्षा। भारत को विकसित राष्ट्र बनाने के लिए आर्थिक विकास हेतु शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अबाउड, जे., क्रामरज, एफ. और मार्गोलिस, डी. (1999) उच्च वेतन कर्मचारी और उच्च वेतन फर्म। इकोनॉमेट्रिका,

2. अबाउड, जॉन और लेंगरमैन, पॉल और मैकिनी, केविन। (2002)। अमेरिकी अर्थव्यवस्था में मानव पूंजी का मापन। अनुदैर्ध्य नियोक्ता–घरेलू गतिशीलता, आर्थिक अध्ययन केंद्र, अमेरिकी जनगणना ब्यूरो, तकनीकी पत्र।

3. अन्ना वलेरो, 2021. ''शिक्षा और आर्थिक विकास,'' सीईपी चर्चा पत्र Mhih1764] आर्थिक प्रदर्शन केंद्र, एलएसई।

4. भट्टाराई, रुबा और श्रेष्ठ, देवेंद्र। (2017)। शिक्षा में निवेश और नेपाल की अर्थव्यवस्था पर इसका प्रभाव (शिक्षा व्यय का कृषि उत्पादकता पर अनुभवजन्य विश्लेषण)। जर्नल ऑफ एडवांस्ड एकेडमिक रिसर्च, 117–128।